कक्षा में पुतलियाँ और बच्चे

*राजेश कुमार निमेश**

इस लेख का उद्देश्य अध्यापकों और बच्चों को कक्षा-कक्ष में ऐसे वातावरण से अवगत कराना है जिसके अन्तर्गत पुतली निर्माण की वह सभी सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जिनके द्वारा पुतली निर्माण किया जा सके, ताकि इसके निर्माण एवम संचालन की प्रक्रिया में कोई अड़चन न आए। साथ ही उन्हें बताना है कि कक्षा-कक्ष में अगर बच्चों के साथ मिल बैठकर पुतली निर्माण करते हैं तो बच्चे स्वतः ही उत्साहित होकर पुतली निर्माण में शामिल हो जाएँगे। पुतलीकला संप्रेषण का सरल एवम् शसक्त माध्यम है क्योकि इनके माध्यम से हम बात आसानी से कह सकते हैं, जो शायद दूसरे माध्यम से कहना इतना आसान न हो। इस लेख के माध्यम से पुतलियों के रूप में अध्यापक के समक्ष शिक्षण के नए उपादान सुझाए गए हैं।

प्रारम्भिक कक्षाओं में पुतली कला का प्रयोग करने व उनके द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त करने में जो आनन्द का अनुभव होता है वह ओर कहीं नहीं। बच्चों को सिखाने के लिए अध्यापक को बच्चों के स्तर तक आकर बहुत सी तरकीबें प्रयोग करनी चाहिए। ताकि बच्चा आसानी से समझ सके। यह अध्यापक के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। क्योंकि अध्यापक समझते हैं कि पुतली सिर्फ माहिर लोगों के लिए ही है और पुतली बनाना सिर्फ कला अध्यापक ही सिखा सकते है। यकीनन यह एक भ्रम है, क्योंकि प्राथमिक विद्यालयों में कोई भी अध्यापक अगर वह पुतली कला में रुचि लेना चाहता है तो आसानी से पुतली कलाकार या प्रशिक्षित अध्यापक की मदद लेकर पुतली निर्माण एवम संचालन सीख सकता है और अच्छे नतीजे प्राप्त किये जा सकते हैं। प्रारम्भिक चरणों में कक्षा-कक्ष में पुतली द्वारा शिक्षण करते समय अध्यापक को चिंता करने की जरुरत नहीं है, चाहे वह इस कला में निपुण हो या नहीं।

बच्चे उसके प्रयास को पसंद करेंगे। एक बार बच्चे की रुचि उत्पन्न हो जाए तो वह बहुत उत्साही और जिज्ञासु होकर अपनी इच्छा पूर्ति के लिए कठपुतली बनाने का प्रयास अवश्य करेगा।

*वरिष्ठ प्रवक्ता (दिग्दर्शन कला), केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

अगर अध्यापक चाहता हैं कि बच्चों को पुतली कला से परिचित करवाना चाहिए, लेकिन उसे संदेह है कि कहानी सुनाने के साथ-साथ पुतली संचालन विद्यार्थियों का ध्यान खींच पाएगा या नहीं तो इस संदेह को मन से निकाल देना चाहिए। क्योंकि बच्चों को इस तरह के खेल बहुत अच्छे लगते हैं परंतु यह तब और भी प्रभावशाली होगा जब बच्चे के हाथ मे पुतली देकर उस बच्चे की उम्र के हिसाब से उसे कहानी सुनाई जाए या बच्चा खुद कहानी का एक सदस्य बनकर अपनी बारी आने पर बोल सकता है।

पुतली कला बच्चों को ऐसे सुअवसर प्रदान करती है जो निम्न शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त करने के में सहायक होते हैं–

- सृजनात्मक कथन उत्पन्न करने में
- बच्चे की अनुभव शक्ति (निजी योग्यता) को बढ़ाने में
- आत्मविश्वास और निजी संतोष पाने में
- डर, और निराशा को निकालने में
- सामाजिक पारस्परिक युक्ति विकसित करने में
- मुश्किल को हल करने की युक्ति खोजने में
- सुनने के कौशल को तेज करने में।

पुतलियों के प्रकार

संचालन एवम् निर्माण के आधार पर विभिन्न प्रकार की पुतलियाँ होती है। इसका वर्गीकरण नीचे दिया जा रहा है।

दस्ताना पुतली (Hand Puppet)

इस पुतली को हाथ में पहनकर चलाते हैं। इसलिए यह हस्तपुतली अथवा दस्ताना पुतली के नाम से जानी जाती है। चालक का हाथ पुतली के एकदम अन्दर होता है। और उसे एक प्रत्यक्ष निर्देशन देते हुए चालक संचालित करता है।

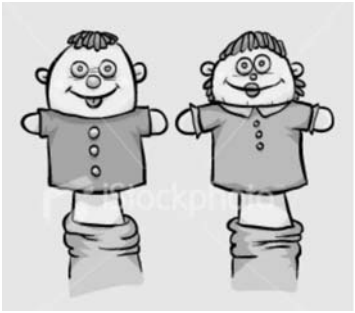

उँगुलियों द्वारा चालित पुतलियाँ (Finger puppet)

उंगुलियों द्वारा चालित पुतलियों का सबसे आसान स्वरूप है। एक उंगुली द्वारा चालित पुतली, यह स्वरूप बच्चों को कहानियाँ सुनाने आदि के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। कहानी के पात्र बहुत जल्दी बनाए जा सकते हैं और उन्हें उँगुलियों पर नचाकर कहानी सुनाते हुए दिखाया जा सकता है।

शलाका पुतली (Rod puppet)

यह पुतली छड़ों द्वारा चलाई जाती है। इसका सिर एक डंडे से जुड़ा होता है। जिसकी सहायता से इसे नचाया/नियंत्रित किया जाता है और एक से ज्यादा डंडों की सहायता से भी इन पुतलियों को चलाया जाता है। इसके लिए कभी-कभी दो चालकों की भी जरुरत होती है।

छड़ पुतली (Stick Puppet)

यह बहुत छोटे परिहास अभिनय या फिर नाटकों के लिए उपयोग की जाती है। बच्चों को अपना अभिनय खुद करने की बजाए उन्हें इस आसान लेकिन मनोरंजक पुतलियों के द्वारा अपना अभिनय करने का मौका देना चाहिए। ये पुतलियाँ बहुत आसानी से बनाई जाती हैं। इन्हें किसी गत्ते या कपड़े पर बनाए गए खिलौने को 6" की Stick के साथ जोड़ दिया जाता है और स्टिक पकड़कर इसे चलाया जाता है।

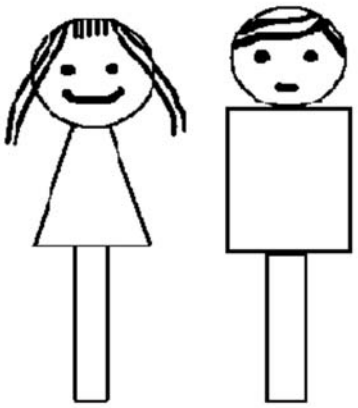

सूत्र संचालित पुतली (String Puppet)

यह पुतली धागों की सहायता से संचालित की जाती है। इसके प्रत्येक अंग को धागों से जोड़ दिया जाता है। ये धागे चालक की उंगुलियों या हाथों में होते हैं जिसके सहारे पुतलियों को संचालित करता है।

छाया पुतली (String Puppet)

छाया पुतली को छड़ियों या धागों की सहायता से जोड़ा जाता हैं। ये छड़ियाँ या धागे चालक द्वारा चालित होते हैं, जिन्हें पर्दे के पास रखा जाता है। जिस पर पीछे से प्रकाशपुंज फैंका जाता है ताकि छाया या प्रतिबिंब दर्शकों को परदे पर दिखाई दें।

कागज के थैले की पुतलियाँ (Paper Bag Puppet)

कागज के थैले से पुतलियाँ बनाने का यह एक आसान तरीका है। इन्हें आप हाथों में दस्तानों की तरह सिर पर मुखौटे की तरह और छड़ डालकर भी चलाया जा सकता है। इन थैलों से शेर, खरगोश, बिल्ली, कुत्ता और आदमी आदि की पुतलियाँ बना सकते हैं। अलग-अलग जानवरों एवम् इंसानों की पुतली बनाते समय इनमें चटकीले रंगों का भी प्रयोग कर सकते हैं। जोकि बच्चों को आकर्षित करते हैं।

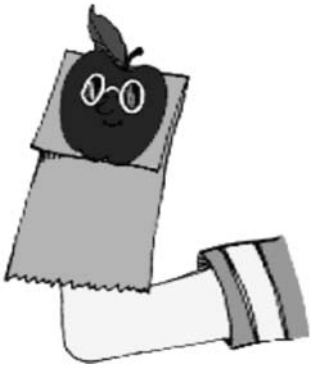

अन्य प्रकार की पुतलियाँ : उपरोक्त पुतलियों के अलावा अन्य कई प्रकार की पुतलियाँ भी होती हैं जिन्हें अलग-अलग सामग्री से बनाया जाता है।

मंच

हर एक किस्म की पुतली के लिए एक अलग तरह का मंच चाहिए और पुतली बनाने से पहले मंच के बारे में जानना बहुत जरूरी हैं क्योंकि

पुतली और मंच के आकार का आपस में गहरा संबंध होता है। इसलिए संचालक पुतलियों के प्रभाव को बढ़ाने के लिए मंच का उपयोग करता है। इन मंचों का निर्माण पुतलियों के आकार और प्रकार पर निर्भर करता है, और कुछ हद तक मंचों की परिस्थितियाँ पुतली संचालक के कार्य को सीमित करती हैं। परंतु

यह निर्णय कठपुतली बनाने वाले और इसे नचाने वाले लेते हैं कि उन्हें इसका खेल प्रस्तुत करने के लिए कैसी परिस्थितियाँ व माहौल चाहिए।

पुतली बनाने हेतु सामग्री की उपलब्धता

अगर अध्यापक बच्चों के साथ मिलकर कक्षा-कक्ष में पुतली बनाना शुरु कर देता है तो अध्यापक के साथ-साथ बच्चों का उत्साह भी बढ़ता है और बच्चे भी देखकर इसमें रुचि लेने लगते हैं। इस रुचि को बरकरार रखने के लिए कक्षा में पुतली बनाने के लिए हर सामान आसानी से मिल जाना चाहिए ताकि अध्यापक और बच्चों को सामग्री हेतु ज्यादा कठिनाई न उठानी पड़े। हर नई कक्षा में पुतली बनाना सिखाना शुरु करने से पहले उस कक्षा के नए वातावरण में अच्छी तरह से घुलमिल जाना चाहिए ताकि कक्षा-कक्ष में अध्यापक बच्चों को आसान तकनीक से पुतलियाँ बनाकर दिखा सके और बच्चे भी उसका अनुसरण कर सकें। बच्चों के लगातार प्रयास के बाद ऐसा वक्त भी आता है जब बच्चे अध्यापक कि मदद लिए बिना काम कर सकते हैं और वही समय है पुतली को प्रस्तुत करने का। हमें यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि अध्यापक हर एक की मदद एक-एक करके नहीं कर सकता इस तथ्य को ध्यान में रखकर बच्चों को एक गोल मेज के आस-पास बिठा सकते हैं जिस पर कठपुतली बनाने का सारा सामान रखा हो। साथ में अध्यापक खुद भी उस मेज के पास बैठ जाए और कठपुतली बनाना शुरु करे। बच्चे कुछ समय के लिए देखेंगे और फिर थोड़े उत्साह के साथ खुद बनाना शुरु करेंगे कभी अध्यापक की नकल करके और कभी बिल्कुल अलग। पहले पुतलियाँ ज्यादा अच्छी नहीं होंगी पर बच्चे प्रोत्साहित होंगें और अपने काम में रुचि लेने लगेंगे। रुचि को बरकरार रखने के लिए हमेशा सरल एवम् जल्दी बनाने का तरीका अपनाया जाए ताकि निराशा उत्पन्न न हो। बच्चे के एक ही प्रयास में सफलता उसे महत्वाकांक्षी बना देती है कि वह और भी अच्छा बनाए। बच्चों द्वारा बनाई हुई पुतली से बिना हस्तक्षेप उन्हें खुलकर खेलने का ज्यादा से ज्यादा मौका देना चाहिए।

कठपुतलियाँ और हस्तकला

जब तक की सही हावभाव और आवाज नहीं मिलाई जाती, पुतली सिर्फ एक कपड़े का टुकड़ा मात्र है। आप किस तरह से पुतली पकड़ते और नियंत्रित करते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण है। प्रायः यह पाया गया है कि कुछ व्यक्ति चाहे बच्चे हों या वयस्क, पुतली को सही तरीके से अपने हाथों में लेते हैं और उन्हें आसानी से नियंत्रित कर लेते हैं और उनकी आँखें, दिमाग और पूरा ध्यान पुतली पर देखा जा सकता है। परंतु कुछ लोग पुतलियों को ऐसे पकड़ते या नियंत्रित करते हैं जैसे वह कोई भारी चीज हो, उनका सारा ध्यान पुतली को संभालने में लग जाता है इसलिए जो व्यक्ति सही तरीके से नियंत्रण करने में असमर्थ हैं उन्हें उसी समय पुतलियों के संचालन से जुड़े सभी पहलुओं को सिखाना चाहिए।

एक संचालक के संवाद बोलने का तरीका उसके चरित्र का एक हिस्सा होता है जो कि उसके मनोरंजन और क्रियाशीलता पर प्रभावी होती हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि संचालन के साथ-साथ संवाद कला भी नाटक को प्रभावी बनाती है जिसमें व्यक्ति पूरा तल्लीन हो जाता है। उसकी शुरुआत बच्चे के अपने नाटक से होती है जब वह खुद नाटक प्रस्तुति में अलग व्यक्ति बन जाता है और उसका यह नाटक युवा अभिनय पर खत्म होता है।

अंतत: बच्चों द्वारा पुतली संचालन करते समय कुछ सावधानी चरित्रों के संबंधों में दी जा सकती हैं कि संचालन से पहले चरित्र के बारे में अच्छी जानकारी हासिल करें कि वह कैसे चलेगा, कैसे उठेगा, कैसे बात करेगा। ताकि आपके संचालन में अभ्यास झलके। जहाँ तक छोटे बच्चों के समूहों की बात है तो वे हमेशा ऐसे विषयों को ही लेते हैं जिनमें उन्हें ज्यादा मज़ा आता है।

कठपुतली और बच्चे

हम बहुत-सी अलग-अलग तरह की पुतलियों से अक्सर खेलते हैं कुछ पुतलियाँ स्वयं बनाई होती हैं, कुछ खरीदी हुई होती हैं, और कुछ वह जो हम अपने बचपन से कभी नहीं भूले। क्योंकि वह निर्जीव चरित्रों को बनाते हुए जिन्दगी में आई। बच्चों को पुतली संचालन सिखाने की आवश्यकता नहीं होती क्योकि बच्चें अपने आप में ही अच्छे पुतली चालक होते हैं। पहली बार बच्चे खिलौनों से खेलते हैं तब उन्हें नचाते हैं या हिलाते हैं और बात करते हैं।

खिलौने और गुड़िया बच्चों के खेल में एक महत्वपूर्ण साधन का रूप लेते हैं। वह हँसते, बतियाते हैं और बहस करते हैं। वह उन्हें चरित्र पर आधारित करके बार-बार चलाते हैं। अर्थात वह बच्चा जो अपनी गुड़िया को चला सके वह पुतली चालक है। वह बच्ची जो अपनी गुड़िया को डाँटती है पर प्यार से एक माँ की तरह, वह एक अभिनेत्री है।

सही मायने में पुतली वही होती है जिसे पुतली चालक बनाता है। वह चालक की दोस्त भी हो सकती है क्योंकि वह चालक के साथ हँस सकती है, खेल सकती है। वह एक मस्खरा भी हो सकती है। वह शरारती भी हो सकती है। जो बच्चा सोचता, महसूस करता है, वह उसके दुख बाँट सकती है। वह उस बच्चे को बता सकती है, जो बच्चा सिर्फ खोना जानता हो, सिर्फ भूख से लड़ना जानता हो, गरीबी से लड़ना जानता हो कि यहाँ पर खुशी और प्यार भी है। पुतली बच्चे को बता सकती है कि उसके बहन-भाई उसके साथ खेल सकते हैं तो नाराज भी हो सकते हैं। एक पुतली बच्चे को यह भी बता सकती है कि उसके माता-पिता दुखी हो सकते हैं, और वह दिखा सकती है कि प्यार की कीमत क्या है, लड़ाई की निरर्थकता क्या है और साथ काम करने और सहारा देने के क्या फायदे हैं।

पुतली सीखने का एक साधन

पुतली सीखने के साधन के रूप में उपयोग में लाई जा सकती है। अध्यापक बच्चों को पुतली की सहायता से प्रेरित कर सकते हैं कि बच्चे अध्यापकों या सहपाठियों से सीधे बात न करते

हुए पुतली के माध्यम से बात कर सकते हैं जो ज्यादा उचित है। इसके लिए बच्चे दैनिक क्रियाकलापों से समय निकालकर इसमें भाग ले सकते हैं।

पुतली एक मनोरंजक वस्तु के अलावा भी बहुत कुछ है। पुतलियाँ बहुत अच्छी विनोदी और कथाकार भी होती हैं, जो कि विषयवस्तु को रोचक ढंग से प्रस्तुत कर सकती हैं। खेल-खेल में वह बहुत कुछ पढ़ा सकती है। पुतली नाट्यशाला एक पाठशाला भी है जहाँ बच्चे अच्छे चरित्र, हावभाव और अच्छे संप्रेषण के बारे में और अपने आपको और अपने आस-पास के लोगों को कैस समझें यह भी सीख सकते हैं।

यह सिखाने का एक लचीला साधन है क्योंकि यह अध्यापक और विद्यार्थी दोनों पर केंद्रित होती है। कोई भी पक्ष आसानी से शुरुआत कर सकता है। इनके द्वारा नीति-कथा, परियों की कहानियाँ, सांस्कृतिक कहानियाँ, गौरव गाथाएँ आसानी से प्रदर्शित की जा सकती हैं और मुश्किलों में घिरे हुए बच्चों के लिए उपयोग में लाई जा सकती हैं ताकि वह समाजिक मुश्किलों का पता लगाकर सही हल की खोज कर सकें। पुतलियों के छोटे-छोटे प्रदर्शन बहुत अच्छे मौके दे सकते हैं जिससे कक्षा में हर मुश्किल का हल निकालने के लिए व दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाई के हल के लिए नए तरीके ढूढ़ सकें। पुतली की सहायता से हम विद्यार्थियों के साथ आत्मसम्मान, ईमानदारी, शिष्टाचार और आरोप-प्रत्यारोप जैसे विषयों पर बात कर सकते हैं।

कक्षा में बच्चों के साथ पुतली नियंत्रण का अनुभव

कक्षा में पुतली चलाने का असली मजा तभी आता है जब विद्याथियों ने पुतलीयाँ खुद बनाई हों। जब बच्चे पुतलियाँ खुद बनाते हैं तब एक संबंध स्थापित हो जाता है जिससे वे प्रेरित होते हैं और जब खुद बनाई पुतली को बात करते और चलते देखते हैं तो उन्हें बहुत आनन्द आता है। बहुदा यह देखा गया है कि विद्यार्थियों द्वारा खुद बनाई गई पुतलियाँ संचालित करते समय वही हावभाव प्रदर्शित होते हैं जैसे बच्चे के होते हैं।

अध्यापक जो पुतलियाँ नियंत्रित करते हैं उन्हें सर्वप्रथम यह सोचने की जरुरत है कि मैं अपनी कठपुतली से क्या काम करवाना चाहता हूँ। क्या कोई नया विषय पढ़ाना होगा, क्या वह कविता होगी, गाना होगा या कोई कहानी होगी? पहले यह निर्णय करना अति आवश्यक है। विषय वस्तु पढ़ाते समय आपको किताबी भाषा या ऐसी भाषा बोलने की जरुरत नहीं है जो आप आसानी से न बोल सकें। आप व्यवहारिक भाषा का उपयोग करते हुए विषयवस्तु पढ़ा सकते हैं। इसके लिए शुरु-शुरु में संचालन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

पुतली निर्माण एवम् संचालन से निरंतर जुड़े रहें और दैनिक क्रियाकलापों में भाग लेते रहें ताकि आप पुतली निर्माण एवम् संचालन में निपुण हो जाएँ। कक्षा-कक्ष में उपयोग करने के लिए पुतलियों के बहुत से रूप ले सकते हैं जैसे पशु-पक्षी, जानवर, स्त्री-पुरुष या काल्पनिक पात्र। परंतु यह ध्यान अवश्य रखें कि पुतलियाँ

प्यारी व कोमल होने के साथ-साथ ऐसी होनी चाहिए कि सारी कक्षा उससे आसानी से खेल सके।

पाठ्यपुस्तकों में निहित विषयवस्तु को ज्यों का त्यों बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करना शायद कठिन कार्य न हो। परंतु पुतली नाटक में विषयवस्तु को कुछ अलग ढंग से लिखने व प्रस्तुत करने में थोड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। जिसके लिए अध्यापक को मन लगाकर प्रयास करने की आवश्यकता होगी। धीरे-धीरे जब वह निपुण होने लगता है तो उसे पुतली द्वारा विषयवस्तु को पढ़ाने में आनन्द आता है।

निष्कर्ष

कक्षा में पुतली का प्रयोग प्रेरणा देने के साथ-साथ साहित्य, समाज एवम् संस्कृति और आपसी संबंधों को समझाने के लिए अच्छे ढंग से किया जा सकता है। अध्यापक सीखें कि कैसे पुतलियाँ बनाए, कैसे प्रयोग करें और कैसे उनका प्रभावशाली तरीके से पाठ्यक्रम में समावेश किया जाए। पुतली कला संप्रेषण का स्पष्ट और सौंदर्यात्मक साधन है और इसका उपयोग करके न केवल कक्षा को रोचक और प्रभावशाली बनाते हैं बल्कि यह हमें ऐसे अवसर उपलब्ध कराता है कि हम हर विद्यार्थी को अहमियत देते हुए सिखाएं। स्पष्ट रूप से पुतली कला दृश्य और सौंदर्य की अभिव्यक्ति के अलावा इसका प्रयोग न केवल कक्षा के शिक्षण को रुचिकर बनाता है बल्कि यह विद्यार्थी के समूह के प्रत्येक बच्चे को अहम रोल अदा करने के लिए अवसर देता हैं। पुतली कला के माध्यम से अध्यापक बच्चों को जानने का प्रयास करता है और कक्षा में सौंदर्यपूर्ण एवं सहयोगात्मकपूर्ण वातावरण बनाने में मदद करता है। कठपुतली कला प्रत्येक बच्चे में खुशी का माहौल पैदा करती है और अपनी भाषा के माध्यम से बच्चों के दिलो-दिमाग पर छा जाती है।

संदर्भ

1. बरसफोर्ड, 1996. *हाउ टू मेक पपेट एण्ड टीच पपेटरी,* मिल्स एण्ड बून लिमिटिड
2. डेविड कुर्रेल, 1974. द *कम्पलीट बुक ऑफ पपेटरी,* पिटमेन पब्लिशिंग
3. गिल गोर्डन, 1986. *पपेट फॉर बेटर हेल्थ,* द मेकमिलन प्रेस लिमिटिड
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1976, राष्ट्रीय-एकता में कठपुतली नाटकों का योगदान
5. निमेश राजेश, शिक्षा में पुतलीकला प्रतिवेदन-2000, (अप्रकाशित) केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद